स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से

गोपालदास 'नीरज'

स्वप्न झरे फूल से- -
गुबार देखते रहे।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से' नामक शीर्षक से अवतरित है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध गीतकार और कवि 'गोपालदास 'नीरज' हैं।

प्रसंगः- इस गीत में कवि जीवन के झंझावातों में उलझे हुए उन बेबस पलों को जीवंत करते है, जो अधूरे सपनों की गोद में असहाय, निरीह और असंवेदनशील बने, वे उन्हें देखते रहते हैं। मनुष्य जीवन की सच्चाई को सात रंगों के इन्द्रधनुष में खोजता है और इसी में अपनी पूरी आयु व्यतीत कर देता है।

व्याख्याः- इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि हमारे स्वप्न फूल की तरह मुरझाकर गिर गए, जब जीवन में खुशियाँ नहीं होती हैं तब अपने अंतरंग मित्र भी शूल के समान लगने लगते हैं। उस समय हमारे जीवनरूपी बगिया में बबूल के वृक्षों में आने वाले फूल भी गिर गए, ऐसा प्रतीत होता है कि वे भी सौंदर्य विहीन हो गए। कवि कहते हैं कि वे फिर भी उसमें बहार (रौनक/खुशियाँ) आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे कहते हैं कि हमारे जीवन के वे पल (कारवाँ) गुज़र (व्यतीत हो) रहा है, हम वहाँ से उड़ने वाली गर्द में अपनी खुशियाँ खोजते हैं।

कवि कहते हैं कि वह अभी पूर्णरूप से सचेत भी नहीं हो पाए थे कि जीवन में आने वाली धूप (खुशियाँ) भी ढल गयी। वह जब प्रगतिपथ पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं तबतक उनका जीवन उनके हाथ से निकल गया। उनके जीवन की सारी खुशियाँ उनका साथ छोड़ जाती हैं और जीवन जले हुए पत्ते और शाखाओं विहीन वृक्ष के समान लगने लगे। उनके मन की सारी आकांक्षाएँ अभी पूरी भी नहीं हो पायी थी कि उनकी उम्र उनके हाथ से निकल गयी।

कवि कहते हैं कि उनके गीतों के भाव की अपेक्षा उनकी आँखों से आँसुओं के रूप में बह निकले। उनके छंद भी छंदहीन (दफन) हो गयें हैं। उनके जीवन में जो दीपक प्रकाश (खुशियाँ) फैला रहे थे अब वे भी धुँआ (बुझ) गए। कवि कहते हैं कि हम जीवन के उस पड़ाव पर रूककर आयु के चढ़ाव का उतार देखते रह गए। हमारा जीवन रूपी कारवाँ गुज़र रहा था और हम उसकी उड़ती हुई धुल को देखते रह गए।

विशेषः- 1.इन पंक्तियों में कवि मनुष्य के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। बुरे समय में उसके मित्र भी उसका साथ छोड़ जाते हैं। व्यक्ति जबतक किसी कार्य को करने के विषय में सोचता है तब समय उसके हाथ से निकल जाता है तथा उसके जीवन में केवल पश्चात्ताप ही रह जाता है।

2. भाषा– हिंदी खड़ी बोली और उर्दू मिश्रित शब्दों का प्रयोग।

3. शैली– वर्णनात्मक शैली।

4. अलंकार– अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार।

5. रस – करुण रस

6. छंद – मुक्तक छंद।

7. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

क्या शबाब था कि -
गुबार देखते रहे।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से' नामक शीर्षक से अवतरित है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध गीतकार और कवि 'गोपालदास 'नीरज' हैं।

प्रसंगः- इस गीत में कवि जीवन के झंझावातों में उलझे हुए उन बेबस पलों को जीवंत करते है, जो अधूरे सपनों की गोद में असहाय, निरीह और असंवेदनशील बने, वे उन्हें देखते रहते हैं।

व्याख्याः- इसमें कवि कहते हैं कि जब उनके जीवन (युवावस्था) में खुशियाँ उच्चतम बिन्दु पर थीं तब पुष्प पल्लवित होकर प्यार कर रहे हैं। उनके उस रूप सौंदर्य को देखकर दर्पण भी मचलने लगा था। उनका जीवन खुशियों से परिपूर्ण था। कवि कहते हैं कि वे सभी से बहुत खुश होकर मिल रहे थे परंतु उनके जीवन में एक ऐसा हवा का झोंका आया कि उनकी सारी खुशियाँ धूल धूसरित हो गयी। कवि कहते हैं कि उपवन की सारी कलियाँ लुट गयीं और सारी गलियाँ भी सूनी तथा घुटन से परिपूर्ण हो गयीं। कवि कहते हैं कि समय के प्रहार ने उनका सबकुछ लूट लिया तथा उनके जीवन में केवल पश्चात्ताप ही रह गया था। उनकी साँसों में मद और नशा ही दिखायी दे रहा था। कवि कहते हैं कि उनका जीवन रूपी कारवाँ गुज़र रहा था और वे केवल उससे उड़ने वाली धूल ही देखते रह जाते हैं।

विशेषः- 1.इन पंक्तियों में कवि मनुष्य की युवावस्था का यथार्थ चित्रण किया है कि इसमें चारों ओर खुशी और सौहार्द का वातावरण होता है। सभी लोग प्रसन्नतापूर्वक प्रेम से मिलते हैं। कभी ऐसा भी समय आता है कि हमारे सामने ही सारी खुशियाँ हमारे हाथ से फिसल जाती है। उस समय हम केवल हाथ मलते ही रह जाते हैं।

2. भाषा– हिंदी खड़ी बोली और उर्दू मिश्रित शब्दों का प्रयोग।

3. शैली– वर्णनात्मक शैली।

4. अलंकार– अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार।

5. रस – करुण रस

6. छंद – मुक्तक छंद।

7. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

हाथ थे मिले कि- -
गुबार देखते रहे।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ‘काव्य मधुवन’ के ‘स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से’ नामक शीर्षक से अवतरित है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध गीतकार और कवि ‘गोपालदास ‘नीरज’ हैं।

प्रसंगः- इस गीत में कवि जीवन के झंझावातों में उलझे हुए उन बेबस पलों को जीवंत करते है, जो अधूरे सपनों की गोद में असहाय, निरीह और असंवेदनशील बने, वे उन्हें देखते रहते हैं।

व्याख्याः- इसमें कवि कहते हैं कि उनका जीवन खुशियों से परिपूर्ण था तब उन्हें चाँद में सुन्दरता परिलक्षित हो रही थी और वे चाँद के कुन्तलों को सवांरना चाहते थे। वे अपने होठों से सभी खुशियाँ (बहार) आदि को पुकार लेना चाहते थे। कवि कहते है कि उन्हें जीवन में जो भी दुखी दिखाई दे रहा है वे चाहते हैं कि उनके सभी दुखों को दूर कर उन्ह् असीम प्रेम दें। वे चाहते हैं कि सभी को इस पृथ्वी पर स्वार्गिक सुख दें पर उनकी ये आकांक्षाएँ पूर्ण नहीं हो सकीं और उनकी सारी खुशियां विलुप्त हो गई। जीवन में ठहराव (शाम) भोर बेला में परिवर्तित हो गया। उनके जीवन में एक ऐसी लहर आयी कि उनके सारे काल्पनिक किले बिखर करढह गये। कवि कहते हैं कि हम उन परिस्थितियों में इतना भयभीत हो गए कि हमारी आँखों में आँसू भर आए। हम स्वयं को अपने कफन से ढककर अपनी समाधि (मज़ार) को देखते रह गए। कवि कहते हैं कि हमारा जीवनरूपी कारवाँ गुज़र गया तथा हम उससे उठने वाली धूल ही देकते रह गए।

विशेषः- 1.इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जब हमारे जीवन में खुशियाँ आती हैं तब हम सभी के दुःखों को दूर करने का प्रयत्न करते हैं और जब दुःख आते (समस्याएँ आती) हैंतो हमारी सारी सकारात्मक योजनाएँ धूल-दूसरित हो जाती है।

2. भाषा- हिंदी खड़ी बोली और उर्दू मिश्रित शब्दों का प्रयोग।

3. शैली- वर्णनात्मक शैली।

4. अलंकार- अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार।

5. रस - करुण रस

6. छंद - मुक्तक छंद।

7. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

माँग भर चली -
गुबार देखते रहे।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से' नामक शीर्षक से अवतरित है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध गीतकार और कवि 'गोपालदास 'नीरज' हैं।

प्रसंगः- इस गीत में कवि जीवन के झंझावातों में उलझे हुए उन बेबस पलों को जीवंत करते है, जो अधूरे सपनों की गोद में असहाय, निरीह और असंवेदनशील बने, वे उन्हें देखते रहते हैं।

व्याख्याः- इसमें कवि अपने जीवन की घटना का वर्णन करते हुए कहते हैं कि प्रातःकाल की (भोर की बेला) में एक नई नवेली दुल्हन की माँग भरी (शादी हो रही है) गयी और वह अपने नए जीवन में प्रवेश करने के लिए अग्रसर होती है। वहाँ पर उस समय खुशियों का माहौल है, ढोलक की मधुर धाप तथा खूब नाच गाना हो रहा है। वहाँ नारियाँ खुशी मना रही थीं। चारों ओर नई नवेली दुल्हन की बिदाई की चर्चा हो रही थी। गाँव के सभी लोग भी उसकी बिदा के लिए उमड़े चले आ रहे थे। तभी उसी क्षण ऐसी गाज गिरी (दुर्घटना घटी)। कि उस दुल्हन की माँग का सिंदूर पुछ (विधवा हो गई) गया और उसकी चुनरी भी तार–तार हो गयी। कवि कहते हैं कि वे इस दृश्य को किंकर्त्तव्यविमूढ होकर दूर के मकान से देख रहे थे। जो कहार पालकी लिए हुए नई–नवेली दुल्हन को उसके गंतव्य तक छोड़ने वाले थे, वे फी हतप्रभ रह गए। कवि उस हृदय विदारक दृश्य को अपनी आँखों के सामने से गुज़रते हुए देख रहे थे तथा उससे उठने वाली आहों (धूल/गर्द) को देखते रहे गए।

विशेषः- 1.इन पंक्तियों में कवि नई नवेली दुल्हन के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है कि जब वह विवाहोपरांत अपने नए जीवन में प्रवेश करने के लिए तत्पर होती है अचानक तभी उसके जीवन में दुःखों का पहाड़ (उसका वैधव्य होना) टूटता है और उसकी सारी खुशियाँ समाप्त हो जाती हैं।

2. भाषा– हिंदी खड़ी बोली और उर्दू मिश्रित शब्दों का प्रयोग।

3. शैली– वर्णनात्मक शैली।

4. अलंकार– अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार।

5. रस – करुण रस

6. छंद – मुक्तक छंद।

7. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के एक शब्द, वाक्य, वाक्यांश में दीजिए।

प्र 01. 'स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से' कविता के कवि का नाम लिखिए।

उ 01. गोपालदास 'नीरज'

प्र 02. कवि के अनुसार किसका सिंगार लुट गया?

उ 02. सभी बाग के बबूल से।

प्र 03. कवि के अनुसार किसका सिंगार लुट गया?

उ 03. सभी बाग के बबूल से।

प्र 04. कवि के अनुसार जिंदगी उनसे कब फिसल गई?

उ 04. जबतक उनके पाँव उठे।

प्र 05. कवि खड़े–खड़े क्या देखते रह गए?

उ 05. बहार देखते रह गए।

प्र 06. कवि कारवाँ गुजरने के बाद क्या देखते रह गए?

उ 06. गुबार।

प्र 07. कवि की नींद खुलने से पहले क्या होता है?

उ 07. धूप का ढल जाना।

प्र 08. कवि के अनुसार उनकी चाह निकलने (इच्छा प्रकट होने) से पहले क्या हुआ?

उ 08. कवि की उम्र निकल गई।

प्र 09. कवि मोड़ पर रूककर किसका उतार देखते हैं?

उ 09. उम्र के चढ़ाव का उतार।

प्र 10. कवि के अनुसार कली–कली का लुटना और गली–गली में कब घुटन हुई थी?

उ 10. कुछ ऐसी हवा के चलने पर।

प्र 11. कवि के अनुसार फूल–फूल कब प्यार कर उठा था?

उ 11. शबाब के समय।

प्र 12. कवि लुटे–लुटे व वक्त से पिटे–पिटे क्या देखते हैं?

उ 12. साँस की शराब का खुमार।

प्र 13. कवि हाथ मिलाने पर क्या करना चाहते हैं?

उ 13. चाँद की जुल्फ को सवांरना।

प्र 14. कवि किसे प्यार देना चाहते हैं?

उ 14. संसार के हर दुःखी व्यक्ति को।

प्र 15. कवि किसे भूमि पर उतारना चाहते हैं?

उ 15. स्वर्ग को ।

प्र 16. कवि के अनुसार कौन माँग भरकर चलने लगी?

उ 16. नई–नई किरण (नई–नवेली दुल्हन)।

प्र 17. कवि के अनुसार नई–नवेली दुल्हन के जाने पर क्या होता है?

उ 17. ढोलकें छुमुक उटना और पैरों (चरणों) का ठुमकना।

प्र 18. कवि दूर के मकान से कैसे देखते हैं?

उ 18. अनजान से बने हुए।

प्र 16. कवि के अनुसार जहर भरी गाज गिरने पर क्या हुआ?

उ 16. नई-नवेली दुल्हन के सिंदूर का पुँछना व चुनरी का तार-तार होना।